International Journal of Education and Science Research Review
E-ISSN 2348-6457
Volume-10, Issue-5 Sep - Oct – 2023
P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org
Email- editor@ijesrr.org

महादेवी वर्मा की गीत सृष्टि सम्बन्धी दृष्टि

शुभा शुक्ला (शोधार्थी) ग्लोकल स्कूल कला व समाजिक विज्ञान, ग्लोकल विश्वविद्यालय, मिर्जापुर पोल, सहारनपुर, उत्तर प्रदेश

प्रो.(डॉ०) मोहम्मद कामिल, (शोध निर्देशक), ग्लोकल स्कूल कला व समाजिक विज्ञान, ग्लोकल विश्वविद्यालय, मिर्जापुर पोल, सहारनपुर, उत्तर प्रदेश

विषय कथन

रागतत्व उनके गीत की महत्त्वपूर्ण विशेषता है। इसके साथ ही उनके काव्य में स्त्री की पीड़ा, बेदना तथा मुखि की तलाश का जो भाव दिखता है, वह उन्हें सर्वश्रेष्ठ बनाता है ही उनकी स्त्री पक्षधरता को भी सिद्ध कर साथ है। महादेवी जी एकान्त की सुरक्षा सर्वत्र चाहती हैं, उनका करुणेश भी यही चाहता है। आशाओं ने उन्हें छला है, इसलिए उसे ही वे दुःख की जननी मानती हैं। उनकी अनन्त की यात्रा रहस्यमय है। आसक्ति और वैराग्य दोनों के परिणामों को उन्होंने व्यंजित किया है। महादेवी जी का साहित्य उनके व्यक्तित्व को भलीभाँति व्यंजित करता है।

प्रस्तावना

काव्य–प्रणयन के क्षेत्र में यदि महादेवी जी का स्थान अग्रणी है, तो गद्य लेखन में भी उन्हें पिछली पंक्ति में नहीं रखा जा सकता है। गद्य में उनकी उद्‌भावनाओं, स्थापनाओं और उनकी विचार सारणियों के आधार पर उनकी तुलना रवीन्द्रनाथ ठाकुर से की जा सकती है। काव्य के क्षेत्र में उनका जो स्थान है, उनके ही समकक्ष काव्य–तत्त्व सम्बन्धी चिन्तन के क्षेत्र में भी है। महादेवी जी ने अपने निबन्धों में रीतिकाल, आधुनिक काल आदि पर विस्तार से विचार किया है। उनकी मान्यता है कि जिस प्रकार नयी शासन व्यवस्था स्थापित करने में बड़े चातुर्य और संघर्ष से काम करना पड़ता है, उसी प्रकार साहित्य में भी पुनर्जागरण के लिए चतुराई से काम लेना पड़ता है और कभी कभी बड़े संघर्ष की संभावना रहती है। हिन्दी साहित्य में जागरण काल का आगमन भी सर्वथा अप्रत्याशित और अनचाहे रूप में हो गया। यह आगमन उस चतुर विजेता शासक के आगमन के रूप में हुआ, हम जिस की उपस्थिति को महत्त्वपूर्ण नहीं मानते और कभी–कभी हम चाहते भी नहीं, लेकिन वह स्वयं अपनी सत्ता स्थापित कर लेने में समर्थ

हो जाता है। जैसे– "कोई चतुर अतिथि बिना किसी समारोह के ही हमारी देहरी पर आ बैठा और आत्मकथा के बहाने अपनी संस्कृति के प्रति हमारे मन में ऐसे परिचय भरी ममता उत्पन्न करने लगा कि उसे आँगन में न बुला लाना कठिन हो गया ।

शून्य में व्याप्त स्वरों की रागिनी की निश्चित रूप रेखा देने वाली वीणा के समान हमारे जागरण युग ने जिस परिवर्तन को काव्य की रूपरेखा में स्पष्ट किया, वह उसके पूर्वगामी युग में भी अशरीरी आभास देता रहा था। यदि वह सुधार का सहचर न होकर कला का सहोदर होता तो सम्भवतः उसके आदर्शवाद मे बोलने वाले यथार्थ की कथा कुछ और होती। पर एक ओर काव्य की जड़ परम्परा की प्रतिक्रिया में उत्पन्न होने के कारण और दूसरी ओर वातावरण में मँडराती हुई विषमताओं के कारण वह इतनी उग्र सतर्कता लेकर

चला कि कला की सीमा–रेखाओं पर उसने विश्राम ही नहीं किया। पर यदि नवीन प्रयोग काव्य में जीवन के परिचायक माने जायें तो वह युग बहुत सज्जीव है और यदि विषय की विविधता काव्य की समृद्धि का मापदण्ड हो सके तो वह युग बहुत सम्पन्न है, किन्तु काव्य भाषा की परिवर्तन प्रक्रिया शीघ्र ही सहजरूप में परिवर्तित हो जाये संभव नहीं।

''काव्य की भाषा बदलना सहज नहीं होता और वह भी ऐसे समय अब पूर्वगामी भाषा अपने माधुर्य में अज्ञेय हो, क्योंकि एक तो नवीन अनगढ़ शब्दों में काव्य की उत्कृष्ठता की रक्षा कठिन हो जाती है, दूसरे उत्कृष्ठता के अभाव में प्राचीन का अभ्यस्त युग उसके प्रति विरक्त होने लगता है।''2

आधुनिक खड़ी बोली की काव्य कृतियों के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि उसमें परम्परा और आधुनिकता का संगम है। इस प्रसंग में महादेवी जी अपने विचार व्यक्त करती हैं कि तद्भव और अपभ्रंश शब्दों के स्थान पर शुद्ध संस्कृत शब्दों को प्रधानता देने वाली खड़ी बोली के लिए उस युग ने वही छनद चुने जो संस्कृत काव्य में उन शब्दों का भार ही नहीं संभाल पाये थे। नाद सौन्दर्य की कसौटी पर भी परखे जाकर खरे उतर चुके थे। विषय की दृष्टि से उस काव्य युग के पास जैसी चित्रशाला है उसका विस्तार यदि विस्मित कर देता है तो विविधता कौतूहल का आधार बनती है। उसमें पौराणिक गाथाएँ बोलती हैं। साधारण दृष्टान्त कथाएँ मुखर हैं। अतीत का गौरव गाता है और वर्तमान विकृतियों से कुन्दन का स्वर मँडराता है। कृषक, भ्रमजीवी आदिका श्रम निमंत्रण देता है और आर्त–नारी की व्यथा पुकारती है।

महादेवी वर्मा महादेवेवी के काव्य में रागतत्त्व–चिन्तन

प्रेम की अनुभूति मानव–जीवन की सबसे अधिक व्यापक और प्रभावशाली प्रवृत्ति है। व्यापकता के कारण ही प्रेम की अनुभूति केवल सूक्ष्म इन्द्रियों तक ही सीमित नहीं है, प्रत्युत वह मन के सूक्ष्मतर भावों से है। प्रेम शब्द का अपने आप में व्यापक अर्थ है। स्नेह, सौहर्द प्रियता, अनुराग, आनन्द आदि।

मानव की अत्यन्त कोमल भावना प्रेम ही है और यही भावना उसे लोक के अनेक

कार्यों में संलग्न करती है। प्रेम का स्वरूप अत्यन्त भाषात्मकः व्यापक और अनिर्वचनीय है। वह मूक के आस्वादन के समान गुण और कामना रहित है और अत्यन्त सूक्ष्म अनुभव है। प्रेम साधना की ऐसी उच्चतम और पावन भूमि है, जहाँ पहुँचकर समस्त भेद समाप्त हो जाते हैं। प्रिय और प्रेमी एक हो जाते हैं। प्रेम की अनुभूति पवित्र है और उसमें आत्म समर्पण की भावना सात्विक है। प्रेम मानव जीवन का सार है। काव्य के क्षेत्र में भी प्रेम की अभिव्यक्ति अनेक रूपों में होती है।

''वस्तुतः प्रेम इच्छा, ज्ञान और क्रिया वृत्ति की त्रिवेणी है। ये तीनों मिलकर जब एक हो जाते हैं, तो इसी मिलन–स्थल को प्रेम कहा जाता है। प्रेम मूलतः इच्छा है, जो ज्ञान के सहारे एक प्रकार का रूप ग्रहण करता है। जब सहृदय व्यक्ति शच्छत वस्तु, व्यक्ति या दृश्य का अवलोकन करता है, तो उसके प्रति अनायास ही रागात्मक सम्बन्ध हो जाता है। इस प्रकार सुन्दर वस्तु, व्यक्ति या दृश्य के प्रति दृष्टा के रागात्मक सम्बन्ध को प्रेम कहते हैं।

प्रेम को अनेक रूपों में देखा जा सकता है। जैसे दाम्पत्य प्रेम, वेदना से प्रेम, स्वदेश प्रेम तथा भक्ति प्रेम कह सकते हैं। महादेवी जी के गीत अपने अज्ञात प्रियतम के लिए एक समर्पित भेंट है, जिसमें हृदय के प्रेम भावों का ही उद्‌गार है। महादेवी जी का प्रियतम रहस्यमय है, वह उनके अन्तर में समाया है। अतः उसके लिए परिचय व्यर्थ है–

''तुम मुझमें प्रिय फिर परिचय क्या
तारक में छवि प्राणों में स्मृति
पलकों में नीरव पद की गति
लघु उर में पुलकों की संस्कृति।

महादेवी जी के काव्य में व्यक्त स्त्री में पीड़ा की तीव्र अनुभूतियों की अभिव्यक्ति से स्त्री स्वाधीनता और उसकी आस्मिता की चेतना का पक्ष जुड़ा हुआ है। युगीन संदर्भों में इनके यहाँ स्त्री की सामाजिक स्थिति को इनकी 'नीर भरी दुःख की बदली 'कविता से परखा जा सकता है। इस कविता में स्त्री की समस्त शक्ति और सामाजिक क्षेत्र में उसकी सम्भावनाओं को व्यक्त किया गया हैं साथ ही असीम शक्ति और असीम संभावनाओं से जुड़ी इस आधुनिक नारी की समाज में क्या स्थिति है। युग्गीन संदर्भों में स्त्री की सामाजिक अस्मिता की सशक्त अभिव्यापी इस कविता में होती है। एक स्त्री जो बेटी, पत्नी, माँ और प्रेयसी है, पर यह संसार कभी पिता, पहि या पुत्र का है उसके लिए तो यह संसार सिर्फ पाषणों की शयनागार' बनकर रह जाता है। महा देवी जी के काव्य में व्यक्त स्त्री अपनी पहचान और अस्मिता को लेकर पूरी तरह आगरूक है। स्वाधीनता की चेतना से परिपूर्ण है। अजगर की कुण्डली के समान, स्त्री के व्यक्तित्व को कसकर चूर–चूर कर देने वाले अनेक सामाजिक बन्धनों को तोड़ फेंकने के लिए इनकी कविता निरन्तर प्रयासरत रहती है। सामाजिक बन्धनों से मुक्ति की आकांक्षा इनकी मूल काव्य चिन्ता है। यह मुक्ति किसके लिए? सिर्फ और सिर्फ अपनी सामाजिक पहचान के लिए।

वैयक्तिक आस्मिता का प्रश्न आगे चलकर जातीय और सामाजिक अस्मिता के प्रश्न में बदल जाता है। महा देवी वर्मा जी ने अपने रचनात्मक गद्य में हाशिये पर पड़े अभावग्रस्त, दलितों, वंचितों और शोषितों को पूरी संवेदना में सामाजिक पहचान दी है, साथ ही उनकी सामाजिक अस्मिता के पक्ष को उठाया है। अपनी काव्या त्मक संवेदना में भी वे सामाजिक पराधीनता का दंश झेल रहे वर्ग को महत्त्वपूर्ण स्थान देती है। राश्मे की '''दुविधा' में ही उन्होंने भारतीय सामाजिक जीवन की पीड़ा को अपनी अक्षय करुणा का वरदान दिया है और उसे वैभवपूर्ण, प्रतिष्ठित और अधिकार सम्पन्न सामाजिक जीवन से बढ़कर माना है और सारी दुविधा' को छोड़ दैन्यता से भरे अभावग्रस्त जीवन पर अपनी संवेदना को केन्द्रित किया है। स्त्री स्वत्व और स्त्री आस्मिता की खोज तत्कालीन सामाजिक इतिहास में एक महत्त्वपूर्ण सामाजिक मूल्य था, जिसे उस दौर की स्त्री लगातार महसूस कर रही है। राष्ट्रीय आन्दोलन में स्त्री की सक्रिय भागीदारी से समाज में उसका मूल्य एकाएक बढ़ गया था। राष्ट्रीय मुक्ति और स्त्री मुक्ति के प्रश्न अन्योन्याश्रित से दिखने लगे थे।

महादेवी जी केवल स्त्री पीड़ा, विरहवेदना की राह से स्त्री आस्मिता के मूल्य को ही नहीं प्राप्त करती, बल्कि वैयक्तिक पीड़ा के द्वारा सामाजिक पीड़ा जैसे उदान्त भाव से जुड़ती हैं। सामाजिक करुणा का यह भाव आगे चलकर मानवतावाद और लोकर मंगल से जुड़ता है– ''अलि में कण–कण को जान चली सबका क्रंदन पहचान चली।''

उनकी अनेक कविताएँ मानवतावादी मूल्य को व्यक्त करती हैं, यह मूल्य युग चेतना के अनुरूप ही इनके काव्य में स्थान पाता है। उनके समूचे काव्य और गद्य में केवल और केवल शिल्पगत अंतर ही दिखाई देता है। करुणा प्रदन्त मानवतावादी दृष्टिकोण उनके संपूर्ण साहित्य का एक महत्त्वपूर्ण सामाजिक मूल्य है। एक स्त्री की कीड़ाओं और वेदना के पीछे के तीव्र पराधीनता बोध को व्यक्त करते हुए मुक्ति का संदर्भ उनकी कविताओं में अनुभव के स्तर पर गहरे डूबकर उभरता है। सामा जिक जीवन में स्त्री की तीव्र पराधीनता अनित वेदना, मुक्ति के कई–कई पक्षों को खोजती हुई दिखाई देती है।

अतः कहा जा सकता है कि महादेवी जी के काव्य में वर्णित प्रेम अपनी गरिमा, महिमा, व्यापरता, व्याकुलता, औत्सुक्य, उत्कण्ठा, वेदना, उत्पीड़न, कसक, टीस और शुचिता आदि गुणों के कारण अधिक संयत, शालीन, श्रेष्ठ और गौरवपूर्ण है। ने ही महादेवी जी के काव्य की प्रेम पीठिकाएँ हैं। इन्हीं क्षेत्रों में होकर उनकी प्रेम धारा प्रवाहित हुई, जो मूलतः एक होते हुए भी भिन्न–सा प्रतीत होती है। वस्तुतः उनके में प्रेम काव्य ही अनेक रूपों में व्यंजित हुआ है। वहीं उनके काव्य का प्राण है। उनके काव्य से प्रेम को निकाल देने पर काव्य कंकाल ही शेष रह जाता है, जो प्रेम–प्राण के बिना निस्सार है। अतः महादेवी जी के काव्य में प्रेम ही सर्वोपरि और सर्वप्रधान है।

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि महादेवी वर्मा जी की सम्पूर्ण साहित्य धारा अन्तः सलिला की भाँति प्रवाहित रहती है। उनके साहित्य स्हजन मे गीत की सृष्टि उन्हें और भी उत्कृष्टता प्रदान करती है। रागतत्व उनके गीत की महत्त्वपूर्ण विशेषता है। इसके साथ ही उनके काव्य में स्त्री की पीड़ा, बेदना तथा मुखि की तलाश का जो भाव दिखता है, वह उन्हें सर्वश्रेष्ठ बनाता है ही उनकी स्त्री पक्षधरता को भी सिद्ध कर साथ है। महादेवी जी एकान्त की सुरक्षा सर्वत्र चाहती हैं, उनका करुणेश भी यही चाहता है। आशाओं ने उन्हें छला है, इसलिए उसे ही वे दुःख की जननी मानती हैं। उनकी अनन्त की यात्रा रहस्यमय

है। आसक्ति और वैराग्य दोनों के परिणामों को उन्होंने व्यंजित किया है। महादेवी जी का साहित्य उनके व्यक्तित्व को भलीभाँति व्यंजित करता है।

संदर्भ

1. सिंह, डॉ0 विनोद कुमार–संपा०– साहित्य धर्मिता 'महादेवी वर्मा विशेषांक', भारतीय प्रिंटर्स, शेखपुरा, जौनपुर, संस्करण–1988, पृ०–101–102.

2. वही, पृ०–102.

3. शर्मा, क्षमा– स्त्री का समय, मेधा बुक्स, दिल्ली, संस्करण–2001, पृ०–62.

4. यादव, संगीता – महादेवी वर्मा की स्त्री दृष्टि, संजय बुक सेंटर, वाराणसी, संस्करण–2013, पृ०–52.

5. सिंह, डॉ0 विनोद कुमार–संपा0–साहित्यधर्मिता 'महादेवी वर्मा विशेषांक' भारतीय प्रिंटर्स, शेखपुरा, जौनपुर, संस्करण–1988, पृ०–103.

6. वही, पृ०–103–104.

7. गुप्त, डॉ० गणपतिचन्द्र– महादेवी : नया मूल्यांकन, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण–1997, पृ०–69.

8. वही, पृ०–96.

9. सिंह, डॉ0 विनोद कुमार–संपा0 – साहित्य धर्मिता महादेवी वर्मा विशेषांक, भारतीय प्रिंटर्स, शेखपुरा, जौनपुर, संस्करण–1988, पृ०–105.

10. वही, पृ0–105–106.

11. वही, पृ०–46.

12. शुक्ल, रामदेव–महादेवी वर्मा के गद्य की सर्जनात्मकता, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण–2006, पृ०–162.

13. जैन, निर्मला–संपा०– महादेवी साहित्य समग्र, (भाग–1) बाणी प्रकाशन, संस्करण–202, पृ०–113.

14. जैन, निर्मला– संपा0– महादेवी साहित्य समग्र (भाग–3), वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, संस्करण–2002, पृ॰–494.